सं॰ मो.बि./गुड़गांवा/85-84/28362.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० ओ. के मटल वर्कस, पटौदी रोड़, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री वीरेन्द्र सुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले → में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौडोगिक विवाद श्रिविनयम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मक्तियों का प्रयोग करते हुए, इरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए श्रिविसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के श्रीतीन गठित श्रम म्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्देश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री वीरेन्द्र कुमार की सेवासों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो०वि०/यमुना/14-84/28369.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि 1. सचिव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़ 2. कार्यकारी ग्रिमियन्ता (ग्रोप्रेशन), हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, नजदीक रघुनाथ मन्दिर, यमुनानगर रोड, जगाधरी, के श्रमिक श्री सतपाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, प्रव, प्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिथे निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री सतपाल की सेवाभ्रों का समापन न्यायचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० स्रो०वि०/यमुना/40-8:1/28383.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० स्राधुक्ति स्टील उद्योग, छछरीली गेट, जगाधरी के श्रमिक श्री नारायण सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई स्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, भौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री नारायण सिंह चौकीदार की सेवाम्रों का समापन न्यायाचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं॰ घो.वि./परीदाबाद/164-84/28389.--चूंकि हृश्यिणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ रतन चन्द, हरजस राय (मोल्डिगंज), प्रा. लि. 54, इण्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद, के श्रमिक भी राजेन्द्र प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निश्चित मामले में कोई घौद्योगिक विवाद है;

सौर चूँकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, श्रीशोगिक विवाद ग्रिशिनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई अवतमें का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रशिमुचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जुन, 1968 के साम पढ़ते हुए धिवसूचना सं० 11495-जी-जम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा चन्त विवादमस्य की द्वारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादमस्य या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित की ने लिखा मामला ज्वायिन के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या सो विवादमस्य मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

श्या श्री राजेन्द्र प्रसाद की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भी.वि./गुड़गावां/83-84/28396.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० 1. मुख्य श्रिभयन्ता, पी डब्लयु. डी. (पवित्रक्ष हैव्य), हरियाणा, चण्डीगढ़ 2. कार्यकारी श्रिभयन्ता, भूमि जल स्वास्थ्य उप-मण्डल, गुडगावां. के श्रीमिक श्री जय नारायण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीजोगिक विदाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेलु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, मौद्योगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947, की श्वारा 10 को उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यसाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए भ्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यामालय, फरीदावाद, को विवादपस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या हो विवादपस्त मामला है या विवाद से सुसंगत धावता सम्बन्धित मामला है:—

क्या और जर्रा नारायण की सेवाझों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 9 अगस्त, 1984

सं. गो.वि./एफ.डी./43-84/29509.---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैसर्ज करन ग्राटो लि॰, प्लाट नं॰ 111-112, सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रीमक श्री बुद्धि राम तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई गोधोगिक विवाद है:

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यशल इसके द्वारा सरकारो अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादपस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनगंथ के लिथे निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादपस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बुद्धि रा^म की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 14 ग्रगस्त, 1984

सं. मो.वि./ जी.जी. एन./95-84/30584.—चूंकि हरियाणा के राज्येपाल की राये है कि मैं० पोलीसेक्स, 15/1, दिल्ली रोड़, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री श्राधा प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य हसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिश्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव, घोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपद्यारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-अप-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-अप-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उन्त (λ, γ)

प्रिवित्यम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्थ मामला न्यायनिजय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के ६ सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री ब्राधा प्रसाद की सेवाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, त.

सं. श्रो.वि./सोनीपत/185-84/30591.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि रोलिंग मिल इण्डस्ट्रीयल एरिया, सोनीपत के श्रीमक श्री फूल चन्द तया उसके प्रवन्धकों के वा मामले में कोई प्रौद्योगिक विवाद है; ्र स्टील तद निखित

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट श्वरना वांछनीय समझते हैं 🕽

इसलिए, भव, भौबोगिक विवाद भिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रश्निस्चना सं० 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी प्रिधिस्चना सं० 3864-ए-ग्रो० (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त भिष्ठिनियम की द्वारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री फूल चन्द की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो.वि./सोनीपत/184-84/30598-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. सोनीपत आयरन एंड स्टील रोलिंग मिल इण्डस्ट्रीयल एरिया, सोनीपत के श्रमिक श्री मान चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिष्ठिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिष्ठिसूचना सं. 3864-ए-श्रो.-(ई)-श्रम 70/1348, दिनांक 8 मई,, 1970 द्वारा उक्त ग्रिष्ठिनियम की धारा 7 के ग्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री मान चन्द की सेवाओं का समापन न्यायोवित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं॰ भ्रो.वि./जी. जी.एन./101-84/30605.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं॰ करतार पोटरीज. दौलताबाद रोड़, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री प्रेम चन्द सथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीदोगिक विवाद है;

भौर पूर्ति हरियाणा के ﴿ राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निरिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रन, भौदोगिक विवाद पूछिनियम, 1947 की छारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई किलियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी मिछस्चना सं > 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, मिछस्चना सं > 11495/जी श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की छारा 7 के मेछीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनियम के लिये निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रमका सम्बन्धित मामला है :----

क्या की प्रेम च द की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?